इकाई 23 अनुवाद

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

23.1 प्रस्तावना

23.2 'अनुवाद' शब्द का अर्थ और व्याख्या

23.3 अनुवाद की प्रक्रिया (1): अर्थग्रहण

- 23.3.1 शब्दबोध
- 23.3.2 वाक्यबोध
- 23.3.3 रचनाबोध

23.4 अनुवाद की प्रक्रिया (2): संप्रेषण

- 23.4.1 शब्द की समतुल्यता का सिद्धांत
- 23.4.2 श्लिष्ट शब्द
- 23.4.3 वाक्य की समानार्थकता का सिद्धांत
- 23.4.4 रचना की समानार्थकता का सिद्धांत

23.5 अनुवाद करने का व्यावहारिक ज्ञान

- 23.5.1 भाषा की प्रकृति की समझ
- 23.5.2 शब्दों का सही प्रयोग
- 23.5.3 वाक्य-रचना
- 23.5.4 विभिन्न क्षेत्रों मे हो रहे अनुवाद

23.6 सारांश

23.7 उपयोगी पुस्तकें

23.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

आप आधार पाठ्यक्रम के चौथे खंड की 23वीं इकाई पढ़ने जा रहे हैं। इसके पहले की इकाई में आपने 'समाचार लेखन और संपादकीय' का अध्ययन कर लिया है। यह इकाई 'अनुवाद' से संबंधित है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- बता सकेंगे कि अनुवाद क्या है,
- अनुवाद की प्रक्रिया का वर्णन कर सकेंगे,
- यह भी बता सकेंगे कि अनुवाद करते समय किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है,
- विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अनुवाद की समस्याएँ बता सकेंगे, और
- आप स्वयं इस प्रकार के अनुवाद कर सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना

आप जिस इकाई को पढ़ने जा रहे हैं, उसका संबंध अनुवाद से है। आधार पाठ्यक्रम के इस खंड में हम हिंदी भाषा के लिखन पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। आपने इसके पूर्व की इकाई में

समाचार लेखन और सम्पादकीय के बारे में पढ़ा। इस इकाई में हम आपको अनुवाद का व्यावहारिक ज्ञान कराने जा रहे हैं। अनुवाद का संबंध भी लेखन से है, लेकिन यह लेखन दूसरे लेखनों से इस अर्थ में भिन्न है कि यह एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करने का कार्य करता है। इस इकाई में सबसे पहले आपको यह बताया जाएगा कि 'अनुवाद' क्या है? उसके बाद हम अनुवाद की भिन्न प्रक्रियाओं से गुजरेंगे और अनुवाद के क्रम में आने वाली दिक्कतों और कुछ भूलों की चर्चा करेंगे। इस इकाई का उद्देश्य अनुवाद संबंधी सैद्धांतिक परिचय देना ही नहीं, वरन् अनुवाद कार्य का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कराना भी है।

इस क्रम में हम अनुवाद कार्य में आने वाली कठिनाइयों और सामान्य भूलों की चर्चा करेंगे। इसके साथ ही उदाहरण देकर आपका मार्ग दर्शन किया जाएगा, पुनः आपको अभ्यास दिया जाएगा। अभ्यास करते समय आप अपने को अकेला न समझें, हम आपके साथ हैं। विभिन्न संकेतों के माध्यम से हम आपको रास्ता दिखाते चलेंगे। इसके बाद आप खुद ज्यादा-से-ज्यादा अभ्यास कर अनुवाद में कुशल हो सकेंगे। हम आपको एक रास्ता दिखाएँगे, आप अनुवाद में कितना प्रवीण हो सकते हैं, यह आपकी मेहनत और लगन पर निर्भर है। अंत में, बोध प्रश्नों के उत्तर दिए जाएँगे। आप अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए नमूने के उत्तरों से मिलाएँ, और खुद जाँच करें कि आपने कितना सीखा। आइए, देखें कि अनुवाद का अर्थ क्या होता है, अनुवाद किसे कहते हैं?

23.2 'अनुवाद' शब्द का अर्थ और व्याख्या

अनुवाद की भिन्न प्रक्रियाओं से गुजरने से पहले यह आवश्यक है कि आप 'अनुवाद' शब्द का अर्थ जान लें ताकि आपके सामने यह स्पष्ट हो जाए कि अनुवाद में क्या करना होता है। संस्कृत कोशों में दिए गए अर्थ के अनुसार, अनुवाद को 'पुनरावृत्ति' कहते हैं। 'पुनरावृत्ति' का अर्थ होता है, फिर से कहना। लेकिन यह पुनरावृत्ति एक भाषा से दूसरी भाषा में होती है। आज अनुवाद का यही अर्थ प्रचलित है कि वह एक भिन्न भाषा की मूल रचना को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है। अंग्रेजी में अनुवाद को 'ट्राँसलेशन' कहते हैं। अनुवाद या ट्राँस्लेशन की सहज-सीधी परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है : 'एक भाषा में प्रकट किए गए भावों-विचारों को ज्यों-का-त्यों दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने को 'अनुवाद' कहते हैं।'

इस परिभाषा से एक बात स्पष्ट होकर आपके सामने आती है कि इसमें कहे हुए को फिर से कहने या दुहराने पर विशेष बल दिया जाता है। सूत्र रूप में इसे इस प्रकार कह सकते हैं- 'कहे हुए को फिर से कहना'। इसमें 'कहे हुए' और 'फिर से कहना' का समान महत्व है। इसके अंतर्गत 'कहे हुए' को ही पुनः 'कहा जाए', यह आवश्यक है। मतलब यह कि मूल लेखक ने जो कहा है, वही अनुवादक को दूसरी भाषा में कहना होता है। इसलिए 'कहे हुए' को समझना उसकी पहली जिम्मेदारी है, क्योंकि अगर मूल भाषा में कही बात को अनुवादक समझेगा ही नहीं तो अपनी भाषा में वही बात कैसे कहेगा? 'कहे हुए' में दो पक्ष महत्वपूर्ण होते हैं (1) उसका विषय और (2) भाषा। 'कथ्य' को अच्छी तरह समझने के लिए किसी भी अनुवादक को विषय और भाषा दोनों की बहुत अच्छी जानकारी होनी चाहिए। अगर आप अंग्रेजी में लिखी हुई 'दर्शनशास्त्र' की किसी कृति का अनुवाद कर रहे हैं तो यह आवश्यक है कि आपको दर्शनशास्त्र की उस शाखा की बुनियादी बातों का ज्ञान हो और अंग्रेजी भाषा में गहरी पैठ हो ताकि जो कुछ कहा गया है वह आप भी समझ सकें और जिस अंदाज में कहा गया है उसे भी समझें। जब आप कही हुई बात और कहने के ढंग को समझ लेंगे तभी उस बात को उसी प्रभाव के साथ अपनी भाषा में कह सकेंगे। इससे एक बात तो आप साफ तौर पर समझ गए होंगे कि मूल रचना के भाव, विचार या संदेश को ज्यों-का-त्यों बिना घटाए-बढ़ाए, वैसा ही प्रभाव डालते हुए दूसरी भाषा में कहना अनुवादक का कर्तव्य होता है। यह अनुवाद का पहला और महत्वपूर्ण सिद्धांत है - शेष सारे सिद्धांत इसी से जुड़े हैं।

अनुवाद के अंतर्गत दो भिन्न भाषाओं का अस्तित्व होता है— एक 'स्रोत भाषा' और दूसरी 'लक्ष्य भाषा'। स्रोत भाषा से तात्पर्य उस मूल भाषा से है, जिससे अनुवाद किया जाता है।

'लक्ष्य भाषा' वह भाषा है, जिसमें या जिसके माध्यम से अनुवाद किया जाता है। ग्रहीत विषय के साथ ही स्रोत एवं लक्ष्य भाषा के स्वरूप और उनकी प्रकृति की समुचित जानकारी अनुवादक के लिए आवश्यक है।

बोध प्रश्न– 1

i) 'अनुवाद' से आप क्या समझते हैं? (आपका उत्तर दो पंक्तियों से अधिक का नहीं होना चाहिए)।

.....

.....

.....

ii) निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है और कौन-सा गलत? (सही कथन के सामने (×) का चिह्न लगाएँ और गलत कथन के सामने (√) का चिह्न लगाएँ।

क) जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे 'लक्ष्य भाषा' कहते हैं। ☐

ख) जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे 'स्रोत भाषा' कहते हैं। ☐

ग) अनुवाद के लिए दोनों भाषाओं की जानकारी आवश्यक नहीं है। ☐

घ) अनुवाद के लिए विषय और मूल भाषा का ज्ञान अनिवार्य है। ☐

iii) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें)

'कहे हुए को फिर से कहना' ..... का अनिवार्य अंग है।

(समाचार लेखन, अनुवाद, कविता, कहानी)

iv) स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा के तात्पर्य को एक वाक्य में स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

23.3 अनुवाद की प्रक्रिया (1) : अर्थग्रहण

अभी आपने अनुवाद का साधारण और सामान्य परिचय प्राप्त किया। इस क्रम में आपने पढ़ा कि अनुवादक के लिए मूल भाषा या स्रोत भाषा में निहित विचारों को समझना अत्यंत आवश्यक होता है। इसके अभाव में अनुवाद किया ही नहीं जा सकता। अनुवाद की प्रक्रिया जानने से पहले आप यह जान लें कि जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे 'स्रोत भाषा'(हमारे इस पाठ के संदर्भ में अंग्रेजी) और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे 'लक्ष्य भाषा'। (इस पाठ के संदर्भ में हिंदी) कहा जाता है। अनुवाद की प्रक्रिया के दो चरण होते हैं : पहले चरण को हम 'अर्थग्रहण' या 'मूल रचना का अर्थ समझना' कह सकते हैं और दूसरे चरण को 'संप्रेषण' या दूसरे तक पहुँचाने के लिए 'अपनी भाषा में वही बात कहना'। संक्षेप में, 'समझना' और 'कहना' दो चरण हैं। 'समझने' की प्रक्रिया ऐसी है, जिससे हर सजग पाठक भी गुजरता है। जो भी पाठक किसी रचना को पढ़ता है वह उसे समझने की भी कोशिश करता है। समझने की इस कोशिश के कई स्तर हो सकते हैं। उदाहरण के लिए 'उपन्यास' या 'कहाना' पढ़ते समय अगर बीच में दो-एक शब्दों को आप नहीं भी समझ

पाते तो उससे आपके 'आनंद' में विशेष बाधा नहीं पड़ती। क्योंकि 'कथा' का प्रवाह भंग नहीं होता। जहाँ केवल 'कथा' प्रमुख लक्ष्य है, वहाँ एकाध शब्द का महत्व नहीं रह जाता। कथा-रस में शब्द को गहराई से न समझने से भी बहुत असर नहीं पड़ेगा। लेकिन 'अनुवादक' के रूप में आप किसी भी शब्द को छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकते, क्योंकि जैसा हमने आपको बताया अनुवादक को कुछ भी जोड़ने या घटाने का अधिकार नहीं है।

23.3.1 शब्दबोध

अर्थग्रहण के लिए आपको चाहिए कि पहले आप उस सामग्री को *- चाहे वह साहित्यिक रचना हो या कुछ और— जिसका अनुवाद होना है, अच्छी तरह पढ़ें। एक बार और फिर दूसरी बार। पढ़ते-पढ़ते आपको उस रचना में कुछ ऐसे शब्द जरूर मिलेंगे, जिनका शायद आप मतलब न जानते हों या, पक्के तौर पर न जानते हों। ऐसी स्थिति में आपको चाहिए कि उसका अर्थ जानने के लिए आप किसी अच्छे शब्दकोश की सहायता लें ताकि सारी रचना का भाव आपके सामने स्पष्ट हो जाए। जब तक आप हरेक शब्द का अर्थ नहीं जानेंगे, पूरी रचना को नहीं समझ पाएँगे— कम-से-कम अनुवादक के रूप में वह समझ अधूरी ही रहेगी।

शब्द का अर्थ एक ही नहीं होता, कई हो सकते हैं और पूरे प्रसंग के संदर्भ में ही आपको उसे समझना होगा। हम आपको एक-दो उदाहरण देकर इस बात को स्पष्ट करना चाहेंगे। अंग्रेजी का 'may' बहुत सरल शब्द है। दो वाक्य आपके सामने हैं— एक आपके दोस्त का 'I may go to Lucknow tonight' और दूसरा एक अफसर का जो मातहत को डांट पिलाने के बाद कहता है : 'You may go now' इन दोनों वाक्यों में 'may' के प्रयोग को अच्छी तरह न समझा जाए तो अर्थ स्पष्ट नहीं होगा। पहले वाक्य में 'may' 'शायद- या 'हो सकता है- का भाव देता है, जिसमें अनिश्चितता है— 'शायद मैं आज रात लखनऊ चला जाऊँ', जिसमें 'न जाने' या 'न जा पाने' की भी गुंजाइश है। लेकिन अफसर 'You may go now' में 'अब दफा हो जाओ' या 'अब निकलो यहाँ से' का भाव निहित है। इससे उसका रोष भी प्रकट होता है।

एक और उदाहरण लीजिए : 'My father is under the treatment of Dr. Sharma'; 'His treatment of the subject is one-sided'; 'Their treatment of their guests is commendable'.

जाहिर है तीनों वाक्यों में 'treatment' शब्द के अलग-अलग अर्थ हैं और जब तक आप प्रसंग से यह नहीं समझ लेंगे कि इनके अलग-अलग अर्थ क्या हैं, तब तक पूरा वाक्य आपकी समझ में नहीं आएगा। ऐसी स्थिति में आप सफल अनुवाद नहीं कर पाएँगे।

23.3.2 वाक्यबोध

शब्दों को प्रसंगानुसार कोश की सहायता से या बिना कोश के अच्छी तरह समझ लेने के बाद आप 'वाक्य' को भी समझने की कोशिश करें। वाक्यों से ही भाषा बनती है। अर्थ या तो एक वाक्य में या एक से अधिक वाक्यों में स्पष्ट होता है। जिस वाक्य में पूरा अर्थ उस वाक्य को, या दो-तीन-चार वाक्यों में अगर पूरा अर्थ आता हो तो उन सबको मिलाकर, अर्थ समझने की कोशिश करनी चाहिए। आखिर शब्दों को अलग-अलग समझने का मतलब भी यही होता है कि अंततः आप वाक्य (या वाक्यों) का अर्थ सम्यक रूप से समझें। जब तक आप वाक्य में शब्दों की सार्थकता नहीं समझ लेते और पूरा वाक्य अपनी सारी अर्थवत्ता में आपकी समझ में नहीं आ पाता, तब तक शब्दों के अलग-अलग अर्थ कोश में देख लेने से कुछ हल नहीं होता। वाक्य में उन शब्दार्थों की सार्थकता समझनी भी जरूरी है। वाक्य में शब्दों का क्रम भी महत्वपूर्ण होता है। शब्दों के क्रम पर पूरे वाक्य के अर्थ का दारोमदार होता है। कभी-कभी पूरे वाक्य को कई बार पढ़ने पर ही अर्थ स्पष्ट होता है। अगर वाक्य का अर्थ स्पष्ट नहीं हुआ तो अलग-अलग शब्दों के अर्थ जान लेने का भी आपके लिए कोई मतलब नहीं होगा।

ध्यान रखिए, जब तक आप वाक्य का अर्थ अच्छी तरह नहीं समझ लेते अनुवाद असंभव है। अनुवाद शब्द की जगह शब्द रख देने मात्र से नहीं हो जाता। अगर ऐसा होता तो सब का अनुवाद एक जैसा होता और कोई भी व्यक्ति 'अनुवादक' बन बैठता। सफल और सार्थक अनुवाद के लिए स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा— दोनों के वाक्यों की बनावट और उनकी प्रकृति की समुचित जानकारी अनुवादक के लिए अनिवार्य है। आपने देखा होगा कि अंग्रेजी भाषा से हिंदी में अनूदित बहुत सी रचनाओं में अंग्रेजी की वाक्य रचना हिंदी की वाक्य रचना पर इस तरह हावी हो जाती है कि हिंदी वाक्य रचना की प्रकृति ही नष्ट हो जाती है। अनुवादक को इस दोष से बचना चाहिए।

23.3.3 रचनाबोध

अनुवाद में शब्द का अर्थ समझना जरूरी होता है। शब्दों के अलग-अलग अर्थ का कोई महत्व नहीं है, वाक्यों में ढलकर ही वे सार्थक होते हैं। वाक्य के सभी शब्द मिलकर एक अर्थ देते हैं। पर अंततः आपको 'रचना' का अनुवाद करना होता है, शब्दों या वाक्यों का नहीं। अतः अनुवादक को अनुवादित की जा रही रचना का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। ऐसा न होने की स्थिति में मूल लेखक जो कुछ कहना चाहता है अनुवादक उससे भिन्न उसका दूसरा ही अर्थ निकाल लेगा। अनुवादक को पूरी रचना का अर्थ ठीक से मालूम होना चाहिए और ऐसा तभी हो सकता है जब वह उस विषय का जानकार हो। अतः विषय की समुचित जानकारी रचना के बोध के लिए आवश्यक है।

इस प्रकार अनुवाद की पहली प्रक्रिया-अर्थग्रहण पर विचार करते समय आपके सामने तीन मूलभूत बातें आईं— (1) शब्द का सही ज्ञान (2) शब्दों का इस प्रकार प्रयोग हो कि वाक्य का सही अर्थ निकले, और (3) रचना या विषय की सही जानकारी। जब ये तीनों तत्व आपस में मिलते हैं, तो अनुवादक सही ढंग से मूलभाषा में निहित विचार को समझ पाता है, सटीक अर्थ ग्रहण कर पाता है।

बोध प्रश्न– 2

i) निम्नलिखित में से कौन-सा पक्ष 'अर्थग्रहण' के लिए आवश्यक नहीं है?

(गलत विकल्प के सामने (×) का चिह्न लगाएँ।)

क) शब्दबोध

ख) तर्कबोध

ग) रचनाबोध

घ) वाक्यबोध

ii) अनुवाद कार्य शुरू करने से पहले अनुवादक से क्या अपेक्षा होती है? (दो पंक्तियों में उत्तर दें)

.....

.....

.....

.....

23.4 अनुवाद की प्रक्रिया (2) : संप्रेषण

जैसा हमने आपको पहले बताया है, अनुवाद की प्रक्रिया का दूसरा चरण 'संप्रेषण' का,

एक सजग पाठक भी जब कुछ पढ़ता है तो उसे अच्छी तरह समझने की कोशिश करता है और अनुवादक भी मूल पाठ को कई बार पढ़कर उसकी हर बारीकी को भली-भाँति समझने का प्रयत्न करता है। पाठक उतने में ही निश्चित हो जाता है, किंतु अनुवादक उसी बात को अपनी भाषा में दुहराता है। उसे समझी हुई बात को अपनी भाषा में कहना होता है और यहीं पता चल जाता है कि उसने मूल भाषा में कही गई बात को किस सीमा तक और कितनी अच्छी तरह समझा या नहीं समझा है। वास्तव में इस दूसरे चरण — संप्रेषण में यह पता चल जाता है कि वह पहले चरण में कितना सफल रहा या नहीं रहा। यहाँ अगर वह कुशलता का परिचय देता है तो अपने पाठकों के मन पर वही और वैसा ही प्रभाव जमाने में सफल हो सकता है, जैसा कि मूल लेखक की कृति ने उसके पाठकों के मन में जगाया होगा। अतः वह हर प्रकार से 'समतुल्यता' का प्रयास करता है। 'समतुल्यता' का अर्थ है — मूल भाषा में प्रयुक्त शब्द के वजन और समान अर्थ रखने वाले शब्द को 'लक्ष्य' भाषा में खोजना।

23.4.1 शब्द की समतुल्यता का सिद्धांत

'समतुल्यता' सबसे पहले शब्द के स्तर पर सिद्ध करनी होती है। जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं, अंग्रेजी वाक्य के हरेक शब्द को समझकर शब्दकोश की सहायता से उसके लिए 'प्रतिशब्द' - यानी वही अर्थ देने वाला हिंदी शब्द खोजना होता है। इसमें दो कठिनाइयाँ विशेष रूप से आती हैं — एक तो यह कि अगर आप शब्दकोश देखेंगे तो आपको अकसर एक शब्द के कई प्रतिशब्द मिलेंगे। इनमें से एक सही प्रतिशब्द चुन लेना ही आपकी समझदारी का परिचय देगा। यों तो एक शब्द के प्रसंगानुसार भिन्न-भिन्न अर्थ हो सकते हैं परंतु एक प्रसंग में उसका जो विशिष्ट अर्थ होगा वही अर्थ देने वाला शब्द आप चुनें - इसमें पूरे प्रसंग के संदर्भ में शब्द की गहरी समझ अपेक्षित होती है। यह भाषा के अध्ययन और अभ्यास से ही आती है। आपको हमने पहले एक उदाहरण दिया था - 'treatment' शब्द का। पहले वाक्य में उसका प्रतिशब्द 'इलाज' होगा, दूसरे में 'प्रतिपादन' और तीसरे में 'व्यवहार या सलूक'। कहाँ कौन-सा शब्द सटीक बैठता है — इसकी समुचित समझ अनुवादक के लिए आवश्यक है।

शब्दों के अनुवाद में एक कठिनाई और भी आती है। इसका कारण यह है कि एक भाषा में प्रयुक्त शब्दों के सटीक पर्याय दूसरी भाषा में नहीं मिलते। इस स्थिति में यह जरूरी हो जाता है कि हम समान अर्थ देने वाले शब्दों में से प्रसंगानुसार सबसे अधिक सटीक और सही शब्द चुनें वरना वाक्य पूरा अर्थ व्यक्त नहीं कर सकेगा। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी के तीन शब्द हैं — Church, Cathedral, Chapel — इसके लिए हिंदी में गिरजाघर, महामंदिर, प्रार्थनालय शब्द उपलब्ध हैं। महामंदिर और प्रार्थनालय कहने से Cathedral और Chapel का बोध नहीं हो सकता। ('कैथीड्रल' बड़े गिरजाघर को कहते हैं, जिसके मुखिया बिशप होते हैं। बिशप के अधीन अन्य कई गिरजाघर भी आते हैं। 'चेपल' एक छोटा-सा प्रार्थना गृह होता है, जो गिरजाघर या कैथीड्रल के अंदर स्थित होता है। स्कूल, अस्पताल आदि में भी 'चेपल' हो सकता है, जहाँ लोग व्यक्तिगत रूप से प्रार्थना कर सकें) इसका रास्ता यही है कि सही शब्द (सही अर्थ का बोध कराने वाले शब्द) न मिलने की स्थिति में उस शब्द से निकट अर्थ रखने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाए। अंग्रेजी और हिंदी शब्दों का 'अथवा' लगाकर भी प्रयोग किया जा सकता है, जैसे Cathedral या महामंदिर, Chapel अथवा प्रार्थनालय।

लक्ष्य भाषा में कई शब्द रहने के बावजूद अनुवादक को सर्तकता के साथ उनमें से एक का चुनाव करना पड़ता है। एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं या अलग-अलग प्रसंगों में उनका अलग-अलग अर्थ होता है। मान लीजिए एक वाक्य है : "The killings of **innocent** people in Punjab must be **condemned**."

शब्दकोश में 'innocent' के 'निर्दोष', 'निष्पाप', 'निरपराध', 'बेगुनाह', 'निष्कपट', 'अबोध', 'निरीह', 'सीधा', 'अहानिकर' आदि समानार्थक शब्द दिए गए हैं और 'condemned' के 'निंदा करना', 'गर्हणा करना', 'दोषी या अपराधी ठहराना', 'अपराधित करना', 'दंडाज्ञा देना', 'दंड देना', 'जब्त कर लेना', 'निकम्मा ठहराना', 'निराकरण करना', 'रोग असाध्य बताना' आदि। अब उपर्युक्त वाक्य में दोनों शब्दों के लिए कौन-से अर्थ सबसे अधिक सटीक

बैठते हैं, यह आप अपनी समझ के अनुसार निर्णय करेंगे। इसीलिए कहते हैं कि अच्छा अनुवादक बुरे शब्दकोश का भी सदुपयोग कर लेता है और बुरा अनुवादक अच्छे शब्दकोश का भी दुरुपयोग कर सकता है। अगर आपने इसका अनुवाद यों कर दिया :'सीधे लोगों की हत्याओं को **जब्त** कर लेना चाहिए' या'**निष्कपट** लोगों की हत्याओं का **निराकरण** होना चाहिए' तो उसका कुछ अर्थ नहीं निकलेगा— अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। इस वाक्य में आपको 'innocent' के लिए 'निरपराध या बेगुनाह या मासूम' में से एक शब्द का प्रयोग करना होगा ओर 'condemned' के लिए 'निंदा या भर्तस्ना करना' का; तभी वाक्य अपना यह अभीष्ट अर्थ देगा :'पंजाब में निरपराध लोगों की हत्याओं की निंदा की जानी चाहिए' 'innocent' के लिए 'सीधे-सादे लोग' कहने से भी यहाँ अपेक्षित अर्थ नहीं आएगा और 'condemned' के लिए 'बुरा-भला' कहने से भी अर्थ क्षीण होगा। यहाँ सवाल 'सीधे-सादे लोगों' का नहीं, वे 'चालाक' या 'बेईमान' भी हो सकते हैं किंतु उन्होंने कोई 'अपराध' नहीं किया, और 'भर्तस्ना' या 'निंदा करना' जैसे सशक्त शब्दों की 'अर्थ-तीव्रता','बुरा-भला कहने' जैसे हल्के शब्दों में नहीं आती।

अतः ध्यान रखिए कि उपलब्ध हिंदी समानार्थकों में से जो सबसे अधिक उपर्युक्त, सटीक और बराबर की अर्थ-क्षमता वाला शब्द हो वही आपको अनुवाद करते समय चुनना चाहिए।

23.4.2 श्लिष्ट शब्द

श्लिष्ट का अर्थ होता है चिपकना। अतः श्लिष्ट शब्द का अर्थ हुआ 'वह शब्द' जिसमें एक अर्थ के साथ दूसरा अर्थ भी चिपका या सटा रहता है। कहीं-कहीं लेखक एक शब्द का प्रयोग **एक साथ एक से अधिक अर्थों में** करता है ऐसी स्थिति में अनुवादक का कार्य कठिन हो जाता है। उसे ऐसा हिंदी समानार्थक खोजे नहीं मिलेगा, जिसके उस प्रसंग में एक साथ वे ही दोनों अर्थ हो सकें। एक उदाहरण लें। 'If he drinks too much he will **pay** for it later.' यहाँ pay शब्द के दो अर्थ हैं और दोनों अभीष्ट हैं - 'चुकाना या अदा करना' और 'कष्ट सहना' या 'यातना भोगना'। ये दोनों अर्थ अगर किसी हद तक हिंदी के किसी शब्द में आते हैं तो वह 'भुगतना' है 'बहुत पिएगा तो बाद में **भुगतेगा**'। पर सदा यह संभव नहीं होता कि ऐसे पर्याय दूसरी भाषा में मिल जाएँ। तब अनुवादक को एक से अधिक शब्दों का प्रयोग करके और कहीं व्याख्या के द्वारा भी वक्ता का भाव स्पष्ट करना पड़ सकता है लेकिन अनुवादक का यह प्रयास होना चाहिए कि वह श्लिष्ट अथवा प्रतिशब्दों की सावधानीपूर्वक छानबीन करें तथा अनुवाद कार्य में स्रोत भाषा के शब्दों का स्पष्टीकरण और उनकी व्याख्या से अपने को बचाएँ। यदि व्याख्या या स्पष्टीकरण आवश्यक हो जाए तो उसके लिए यदि टिप्पणी का सहारा लेना अधिक उपयुक्त हो सकता है।

इस 'शब्द-समानार्थकता' सिद्धांत को हम 'शब्द-प्रतिशब्द' का सिद्धांत भी कह सकते हैं।

23.4.3 वाक्य की समानार्थकता का सिद्धांत

अनुवादक ने अंग्रेजी की किसी रचना को, उसमें प्रयुक्त शब्दों को, कितनी अच्छी तरह समझा है और शब्दों के जो हिंदी समानार्थक उसने चुने हैं वे कितने सही और सटीक हैं, इसकी कसौटी उस अनुवाद के वाक्य होते हैं। अनुवाद की असली क्षमता इसी में निहित होती है कि वह कितने सही और सार्थक वाक्य बना पाता है। इतना ही काफी नहीं कि वह जो वाक्य बनाये वह व्याकरण की दृष्टि से सही हो और उसमें मूल अंग्रेजी शब्दों के सही समानार्थक चुने गये हों बल्कि यह भी जरूरी है कि वाक्य वही प्रभाव डाले जो मूल अंग्रेजी के वाक्य का पड़ता है। पूरे वाक्य के अर्थ के संप्रेषण के लिए अनुवादक को कभी चुने हुए शब्द बदलने पड़ सकते हैं, कभी उसमें कुछ बढ़ाना या घटाना पड़ सकता है, कभी वाक्य की रचना बदलनी पड़ सकती है तो कभी एक वाक्य को दो या तीन वाक्यों में तोड़ना और कभी दो या अधिक वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य में ढालना पड़ सकता है। यह सही है कि अनुवाद में वाक्य का महत्व बहुत होता है किंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि अनुवादक की निष्ठा उसमें निहित अर्थ या मंतव्य के प्रति होती है और उसे यही देखना होता है कि हिंदी में कैसे वह बिना विकृति के उस मंतव्य को व्यक्त कर सकता है। इस संबंध में हमने 'वाक्य

बोध' (23.3.2) के अंतर्गत संक्षेप में संकेत कर दिया है, लेकिन यहाँ थोड़ा विस्तार में जाने की जरूरत है।

यह याद रखिए कि किन्हीं दो भाषाओं की वाक्य-रचना एक जैसी नहीं होती, उनमें शब्दों का क्रम एक जैसा नहीं होता। अगर आप अंग्रेजी वाक्य में प्रयुक्त शब्द-क्रम का अनुसरण करेंगे तो अकसर गलत वाक्य बनायेंगे और अर्थ का अनर्थ कर बैठेंगे। आपको चाहिए कि हमेशा वाक्य का — या अगर कई वाक्यों में अर्थ पूरा होता है तो वाक्यों का पूरा अर्थ समझकर उसे अपने ढंग से हिंदी में लिखने की कोशिश करें। अच्छा यह होगा कि आप छोटे-छोटे वाक्य बनायें ताकि उनमें कसाव बना रहे। बड़े वाक्यों में अर्थ बिखर भी सकता है, उसके प्रभाव में कमी भी आ सकती है और गलतियाँ भी हो सकती हैं। सबसे बड़ी बात यह होती है कि आपके वाक्यों में हिंदी की वाक्य-रचना की प्रकृति की भी रक्षा हो और अर्थ भी पूरी तरह से समाया रहे। इस तरह लक्ष्य भाषा यानी आपके संदर्भ में हिंदी की सहजता बनी रहेगी। "सहजता का यह सिद्धांतऋ अनुवादक के लिए प्रकाश-स्तंभ होता है।

कुछ उदाहरणों से हम यह बात-स्पष्ट करेंगे :

अंग्रेजी का तीन शब्दों का एक सीधा-सादा वाक्य है 'God is love' इसका अनुवाद 'ईश्वर प्रेम है' करें तो दो बातें ध्यान देने की हैं— 'है' का जो स्थान मूल वाक्य में है, अनुवाद में नहीं; दूसरे, 'ईश्वर प्रेम है' वाक्य अपने आप में अधूरा और अटपटा लगता है। इसमें हिंदी की सहज प्रकृति खंडित हो गई-सी लगती है। आप जब तक इसमें और कुछ नहीं जोड़ेंगे तब तक वाक्य ऐसा ही अटपटा रहेगा। 'ईश्वर प्रेम-रूप है', 'प्रेम ईश्वर का ही **पर्याय** है' इसका विकल्प हो सकते हैं। आप देखेंगे कि इन वाक्यों में कुछ न कुछ जोड़ा गया है। इसी प्रकार एक और उदाहरण लीजिए : 'The existence of quorum is a must for a formal meeting'. इस वाक्य का 'औपचारिक बैठक के लिए कोरम का अस्तित्व आवश्यक होता है' अनुवाद करें तो दो बातें देखी जा सकती हैं : 'कोरम का अस्तित्व' में अटपटापन है। यह प्रयोग हिंदी भाषा की प्रकृति से मेल नहीं खाता। दूसरे 'is' के हिंदी में दोनों अनुवाद होते हैं— 'है' और 'होता है'। आपको ध्यान रखना होगा कहाँ कौन-सा अनुवाद ठीक होगा। इसका ठीक अनुवाद यों होगा : 'औपचारिक बैठक के लिए कोरम आवश्यक होता है।' अपनी भाषा की प्रकृति की रक्षा को अनुवादक को सदा ध्यान रखना होता है। आपने अंग्रेजी के वाक्य 'It was pleasant surprise to me' का यह अनुवाद अकसर देखा-पढ़ा होगा : 'इससे मुझे सुखद आश्चर्य हुआ' पर यह मक्खी पर मक्खी मारने की बात है और अपनी भाषा पर सहज अभिव्यक्ति के अधिकार का अभाव दर्शाता है। इसका मुहावरेदार अनुवाद यों होना चाहिए : 'इससे मुझे आश्चर्य भी हुआ और प्रसन्नता भी'। इसमें बात जितने अच्छे ढंग से आई है, 'सुखद आश्चर्य' में नहीं। अनुवाद में वाक्य-रचना के बदल जाने का उदाहरण देखिए :

'I shall go with you to the meeting if you come on time'.

जैसे वाक्यों का अनुवाद लोग इस प्रकार करते हैं : "मैं आपके साथ बैठक में जाऊँगा अगर आप वक्त पर आ गये" परंतु यह वाक्य-रचना हिंदी की प्रकृति से मेल नहीं खाती। यह अनुवाद यों होना चाहिए : "आप वक्त पर आ गये तो मैं आपके साथ बैठक में चलूँगा।" वाक्य में शब्दों का क्रम बदल गया है और "जाऊँगा" के बजाय "चलूँगा" क्रिया का प्रयोग जान-बूझकर किया गया है क्योंकि "साथ जाऊँगा" में लगता है आप किसी तीसरे व्यक्ति से बात कर रहे हैं : जिसके साथ आपको जाना है उसी से बात करने में "साथ चलूँगा" प्रयोग ही सही और सम्मत है।

कभी-कभी लक्ष्य भाषा की प्रकृति का ध्यान न रखकर मूल भाषा अर्थात् स्रोत भाषा की प्रकृति का अनुसरण करने से और वाक्य में शब्दों को सही जगह न रखने से बड़े-बड़े अनर्थ हो सकते हैं। एक बार आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) से बड़ी दिलचस्प सूचना प्रसारित हुई। बात सन् 1950-51 की है। पं. जवाहरलाल नेहरू तब प्रधानमंत्री थे। देश के विभाजन के तुरंत बाद सरकार अनेक समस्याओं से घिरी थी। एक समस्या उन स्त्रियों की थी, जिन्हें दोनों ओर जोर-जबर्दस्ती करके भगा ले जाया गया था। एक शाम संसद में उन्हीं की समस्या

बयान दे रहे थे। अंग्रेजी वाक्य कुछ इस प्रकार था : "Referring to Prime Minister Shri Jawahar Lal Nehru's statement reg: Kidnapped Women, shri.....said "....." इसका अनुवाद समाचारों में यों प्रसारित हुआ - "प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा भगाई गई औरतों के बारे में दिये गये वक्तव्य का हवाला देते हुए श्री..... ने कहा....." देखिए इस वाक्य में कैसा अनर्थ हुआ है। इसी वाक्य में अगर थोड़ा हेरफेर कर दें — "भगाई गई औरतों के बारे में प्रधान मंत्री श्री ....." तो वाक्य ठीक और सार्थक हो जाता है। अतः वाक्यों में शब्दों के सही "स्थापन" का बड़ा महत्व होता है और उससे वाक्य में कसाव और अभिव्यक्तिक्षमता आती है— उसके अभाव में अर्थ का अनर्थ हो सकता है। वाक्य रचना पेचीदा हो तो भाषा जटिल और दुरूह बन जाती है। मूल-रचना की भाषा शैली का अनुसरण करते हुए भी अनुवादक अपनी भाषा की प्रकृति की रक्षा करते हुए उसे सरल और सुबोध बना सकता है।

23.4.4 रचना की समानार्थकता का सिद्धांत

आप यह पढ़ चुके हैं कि शब्द, शब्दों का क्रम, वाक्य और वाक्यों की योजना सब रचना के अनिवार्य अंग हैं। वास्तव में "शब्द के लिए 'प्रतिशब्द' की तलाश और 'वाक्य' के लिए 'प्रतिवाक्य' बनाने की सारी कोशिशें" 'रचना' के स्थान 'प्रतिरचना' के निर्माण के लिए होती हैं। कहाँ घटाया-बढ़ाया जाये: कहाँ कोशगत अर्थ से भिन्न अर्थ लगाया जाये, कहाँ शब्दों के क्रम को बदला जाये, कहाँ एक वाक्य को तोड़कर एक से अधिक वाक्य बनाये जायें और कहाँ एक से अधिक वाक्यों को एक वाक्य में गठित कर दिया जाये — ये सब युक्तियाँ अनायास नहीं आ जातीं। इनके लिए कठोर और अनवरत अभ्यास की जरूरत होती है।

अनुवाद कैसा बन पड़ा है — यह देखने के लिए आपको चाहिए कि अंग्रेजी की मूल रचना या अवतरण को एक ओर रखकर एक हिंदी पाठक के रूप में उसे स्वतंत्र रचना या अवतरण मानकर पढ़ें। अगर उसमें भाषा और भाव धारा का प्रवाह अवरुद्ध नहीं होता तो यह मान लीजिए कि आप लक्ष्य भाषा की सहजता की रक्षा कर पाये हैं। अनुवाद एक कला है और उसकी सफलता इसमें निहित है कि वह अनुवाद होकर भी अनुवाद न लगे और पाठक को यह पता न लगे कि वह रचना मूलतः हिन्दी में लिखी गई है या किसी और भाषा में। दूसरे शब्दों में, अनुवाद अगर अपने पाँवों पर खड़ा हो सके तो उसे सफल मानना चाहिए। शब्दार्थ में अधिक-से-अधिक "निकट" और लक्ष्य भाषा की रचना में उसकी 'सहजता' तथा 'समतुल्यता' के प्रयास के नाते हम कह सकते हैं कि अनुवाद 'निकटतम सहज समतुल्यता' की साधना होता है।

बोध प्रश्न– 3

i) "शब्द की समतुल्यता के सिद्धांत" से आप क्या समझते हैं? (पाँच पंक्तियों में उत्तर दें)।

.....

.....

.....

.....

ii) नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

शब्दों का प्रयोग करते समय ..... का ध्यान रखना चाहिए। (क्लिष्टता, सहजता, प्रसंग, उच्चारण)

iii) नीचे अंग्रेजी भाषा की एक पंक्ति अनुवाद के लिए दी जा रही है, उसे पहले समझाया जा चुका है। आप बिना पीछे देखे हुए सही अनुवाद का चुनाव करें और उत्तर कोठक में लिखें।

The Killing of innocent people in Punjab must be condemned.

क) पंजाब में निष्कपट लोगों की हत्याओं का निराकरण होना चाहिए।

ख) पंजाब में सीधे लोगों की हत्याओं को जब्त कर लेना चाहिए।

ग) पंजाब में निरपराध लोगों की हत्याओं की निंदा की जानी चाहिए।

घ) पंजाब में निष्पाप लोगों की हत्याओं का निराकरण करना चाहिए। ☐

iv) नीचे अंग्रेजी का एक वाक्य दिया जा रहा है। उसके कई अनुवाद भी दिए जा रहे हैं। आप सबसे सटीक अनुवाद का चुनाव करें।

I shall go with you to the meeting if you come on time.

क) मैं आपके साथ बैठक में जाऊँगा अगर आप वक्त पर आ गये।

ख) आप वक्त पर आ गये तो मैं आपके साथ बैठक में चलूँगा।

ग) अगर आप वक्त पर आये होते तो मैं बैठक में आपके साथ चलता।

घ) अगर आप वक्त पर नहीं आये तो मैं बैठक में नहीं जाऊँगा। ☐

23.5 अनुवाद करने का व्यावहारिक ज्ञान

अब तक आपने अनुवाद के सैद्धांतिक मुद्दों और विभिन्न समस्याओं की जानकारी प्राप्त की। सिद्धांत किसी कार्य को शुरू करने के लिए आवश्यक है, पर सैद्धांतिक ज्ञान अधूरा होता है: उसकी सार्थकता तभी है, जब इसे व्यवहार में लाया जाए। आप यहाँ अनुवाद करना सीख रहे हैं। जब तक आप खुद अनुवाद की समस्याओं से नहीं जूझेंगे, तब तक आप अनुवाद करना नहीं सीख सकेंगे। अनुवाद सिखाने की जो प्रक्रिया यहाँ अपनाई जा रही है, वह इस प्रकार है — पहले एक अंग्रेजी का उदाहरण दिया जाएगा और उसके गलत और सही दोनों प्रकार के अनुवाद आपके सामने रखे जाएँगे। गलती कहाँ है, यह आपको बता दिया जाएगा। पुनः आपको एक अभ्यास दिया जाएगा। आप अनुवाद करें और इकाई के अंत में अभ्यासों के दिए गए उत्तर से मिलाएँ। इस प्रकार आप अनुवाद करने का तरीका जान जाएँगे। आपको अनुवाद करना सिखाने से पहले हम यह मानकर चल रहे हैं, कि आप अंग्रेजी पढ़कर ठीक से समझ सकते हैं और हिंदी भाषा का आपको अच्छा ज्ञान है। अगर ऐसा नहीं है तो अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद नहीं किया जा सकता।

23.5.1 भाषा की प्रकृति की समझ

अनुवाद करते समय अनूदित भाषा की प्रकृति की रक्षा अनुवादक का प्रथम दायित्व होता है। अंग्रेजी भाषा के दो वाक्य आपके सामने रखे जा रहे हैं :

i) I wonder if this is true.
ii) I have two sons.

इनका अनुवाद यदि हिंदी भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखकर न किया जाए तो हिंदी में वाक्य इस प्रकार बनेगा -

i) मुझे आश्चर्य होगा अगर यह सच है।
ii) मेरे पास दो पुत्र हैं।

'if' लगाकर अंग्रेजी में जो वाक्य बनते हैं, उन्हें हिंदी में परिवर्तित करते समय सावधानी बरतनी चाहिए। इन्हें अनुवाद करते समय "लक्ष्य भाषा" की प्रकृति (यहाँ हिंदी) का ध्यान रखना अनिवार्य होता है। जैसे, ऊपर दिए गए पहले अंग्रेजी वाक्य का सही अनुवाद इस प्रकार होगा -

मुझे इसकी सच्चाई में संदेह है।

अंग्रेजी के दूसरे उदाहरण में 'have' लगाकर वाक्य बनाया गया है। इस 'have' का अनुवाद हिंदी में अलग-अलग तरीके से होता है। जैसे - I have a pen..... मेरे पास एक कलम है; I have to go..... मुझे जाना है; I have left my old job ..... मैंने अपनी पुरानी नौकरी छोड़ दी है; I have accepted this theory.....मैंने इस सिद्धांत को स्वीकार किया। आरंभ में 'have' का जो उदाहरण दिया गया — I have two sons; उसका अनुवाद होगा — 'मेरे दो पुत्र हैं' न कि 'मेरे पास दो पुत्र हैं'। कारण स्पष्ट है, हिंदी में हम 'मेरे पास दो पुत्र हैं' का प्रयोग नहीं करते, क्योंकि यह हिंदी की प्रकृति के अनुकूल नही है। 'have' का प्रयोग जब किसी वस्तु के साथ होता है, तभी इसके लिए 'पास' शब्द का प्रयोग हिंदी में करते हैं, जैसे I have two thousand rupees; I have two tables and one chair; 'have' का प्रयोग जब क्रिया के साथ होता है (जैसे खाना, पीना, करना, सोना, चलना आदि) तो 'पास' का प्रयोग नहीं होता। वाक्य के स्वरूप के अनुसार उसका रूप बदलता रहता है। इसका प्रयोग समझ-बूझकर किया जाना चाहिए।

अभ्यास– 1

अब आपके सामने इसी प्रकार के कुछ अंग्रेजी के वाक्य रखे जा रहे हैं। आप इनका अनुवाद हिंदी में करें।

क) I doubt if he will come.

मुझे ..... संदेह है।

ख) We wonder if he accepts this.

हमें .....

ग) I doubt if Ram will be going.

.....

घ) I am not sure if you can do this work.

.....

ङ) I do not think if this is a good book.

.....

अभ्यास– 2

आइए, अब 'have' लगे कुछ वाक्यों का अनुवाद करें।

क) I have three daughters.

.....

ख) I have lost my pen.

.....

ग) I have no idea.

.....

घ) I have passed B.A. examination.

.....

ङ) I have a headache.

.....

च) I have fever.

.....

छ) I have a pain

.....

ज) I have a pain in my neck.

.....

Prepositions या कारक चिह्नों या परसर्गों का प्रयोग

Prepositions या कारक चिह्नों या परसर्गों का प्रयोग करते समय भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखना होता है। Prepositions या कारक चिह्नों या परसर्गों का प्रयोग अंग्रेजी और हिंदी में भिन्न-भिन्न तरीके से होता है। वस्तुतः वाक्य में उनका स्थान भी दोनों भाषाओं में अलग-अलग है। जैसे 'Pen of Ram' यहाँ 'of' कर्ता के पहले आया है; जबकि हिंदी में उल्टी होती है। यहाँ कारक चिह्न या संबंध जोड़ने वाले चिह्न कर्ता के बाद आते हैं, जैसे "राम की कलम" इसलिए अंग्रेजी में इसे 'Prepositions' अर्थात् 'पहले रखा हुआ' और हिंदी में 'परसर्ग' 'बाद का हिस्सा' कहते हैं। अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय कारक चिह्नों या परसर्गों के प्रयोग में सावधानी रखनी चाहिए।

अनुवाद करते समय Prepositions या परसर्गों के प्रयोग में दूसरी सावधानी यह बरतनी चाहिए कि अंग्रेजी के संबंध-चिह्न हिंदी में ज्यों-के-त्यों अनूदित होकर नहीं आते। मसलन, on, का अनुवाद हिंदी में भिन्न-भिन्न अर्थों में होता है। इसका अनुवाद 'पर' भी होता है, 'को' के लिए भी 'on' का प्रयोग होता है, जैसे

i) The book was on the table.

ii) I will visit him on Monday.

इसका अनुवाद इस प्रकार होगा :

i) किताब टेबल **पर** थी।

ii) मैं उसके यहाँ सोमवार **को** जाऊँगा।

इसी प्रकार 'in' का प्रयोग भी भिन्न अर्थों में होता है। कहीं 'in' के लिए 'में' और कहीं 'से' और कहीं 'पर' का प्रयोग होता है, जैसे

i) We arrived in a town.

ii) I reached office in time.

iii) I met him in his house.

अनुवाद

i) हम लोग एक शहर **में** पहुँचे।

ii) मैं समय **से** कार्यालय पहुँचा।

iii) मैं उससे उसके घर **पर** मिला।

'Since' और 'For' के अनुवाद में भी सावधानी रखनी चाहिए। हाँलाकि दोनों के लिए हिंदी में 'से' का प्रयोग होता है। 'for' के लिए 'तक' का प्रयोग भी होता है। पर अंग्रेजी में

इनका प्रयोग भिन्न-भिन्न स्थितियों में होता है। Since का प्रयोग निश्चित समय के लिए जैसे Since Monday, Since six pm. आदि। 'For' का प्रयोग अनिश्चित और 'लम्बे समय' के लिए होता है, जैसे For six days, six months, six years.

उदाहरण :

i) He has been here **since** Monday.

ii) He travelled in the desert **for** six months.

iii) He has been travelling in the deseret **for** six months.

अनुवाद :

i) वह सोमवार **से** यहीं है।

ii) वह छह महीने **तक** मरुभूमि में घूमता रहा।

iii) वह छह महीने **से** मरुभूमि में घूम रहा है।

'To' का अनुवाद भी भिन्न-भिन्न तरीके से होता है :

i) I advised him **to** wait.

ii) I invited my friend **to** play football.

अनुवाद :

i) मैंने उसे इंतजार करने **का** परामर्श दिया।

ii) मैंने फुटबॉल खेलने **के लिए** अपने मित्र को बुलाया।

कभी-कभी 'to' हिंदी में अनुवाद करते समय लुप्त हो जाता है - 'I have to go' - 'मुझे जाना है'।

वस्तुतः अंग्रेजी पूर्वसर्ग (Preposition) का हिंदी अनुवाद करते समय हिंदी भाषा की प्रकृति का ध्यान रखना चाहिए। वाक्य-रचना का इन 'prepositions' पर काफी प्रभाव पड़ता है।

आइए, इन निर्देशों के आधार पर आप कुछ अभ्यास कार्य करें जहाँ कहीं वाक्य गलत हो, उसे शुद्ध करें:

अभ्यास- 3

क) The train came in time.

.....

ख) I met him in Delhi.

.....

ग) My pen is on the table.

.....

घ) He will come on Friday.

.....

ङ) He is teaching in school for one year.

च) He is working here since Tuesday.

.....

छ) I have to buy a pen.

.....

ज) I invited him to play cricket.

.....

23.5.2 शब्दों का सही प्रयोग

अनुवाद करते समय शब्दों के सही और प्रसंग के अनुवाद प्रयोग पर विशेष ध्यान देना चाहिए। एक ही शब्द के अनेक अर्थ शब्दकोशों में मिलते हैं। यह आपके भाषा-ज्ञान, विवेक और समझ पर निर्भर है कि आप शब्द के किस अर्थ को चुनते हैं। अगर प्रसंग आपकी समझ में आ गया है, तो आप शब्द का सही अर्थ चुनेंगे। एक उदाहरण द्वारा यह बात स्पष्ट हो सकती है। एक शब्द है — 'Operation'! इसका इसका प्रयोग दो वाक्यों में किया जा रहा है, देखिए, संदर्भ के अनुसार एक ही शब्द का अर्थ कैसे बदल जाता है -

i) The **operation** done by Doctor is successful.

ii) The Police **operation** in that area was a failure.

अनुवाद :

i) डॉक्टर को **शल्य-क्रिया** में सफलता मिली।

ii) उस इलाके में पुलिस **कार्रवाई** असफल रही।

इन दोनों उदाहरणों 'Operation' का अनुवाद अलग-अलग किया गया है। इसका कारण यह है कि संदर्भ के अनुसार शब्दों के अर्थ बदल गये। डॉक्टर के संदर्भ में यदि '**कार्यवाई**' और पुलिस के संदर्भ में '**शल्य-क्रिया**' का प्रयोग किया जाए, तो कोई अर्थ नहीं निकलेगा। अतः शब्दों का अर्थ प्रसंग के अनुसार ही लगाना चाहिए और प्रसंग के अनुसार ही उनका प्रयोग भी करना चाहिए।

अब आप इसी प्रकार के वाक्यों का अनुवाद करें। आपकी सहायता के लिए 'शब्दों' के विभिन्न अर्थ दिए जा रहे हैं।

अभ्यास - 4

क) **Treatment**[1] of patient by doctor was not satisfactory.

.....

ख) **Treatment**[1]of subject by scholar was not satisfactory.

.....

ग) **Interest**[2] rate of bank is very **high.**[3]

.....

घ) He has no **interest**[2] in sports.

.....

ङ) His main **aim**[4] is to become an I.A.S. officer.

.....

च) His **aim**[4] was not **accurate**[5]; so he could not win the gold medal in shooting.

कठिन शब्दों के अर्थ :

1) Treatment — व्यवहार, बरताव, सलूक, प्रतिपादन, विवेचन, चिकित्सा, उपचार, इलाज।

2) Interest — अधिकार, लाभ, स्वार्थ, रुचि, सूद।

3) High — ऊँचा, ज्यादा।

4) Aim — निराशा, लक्ष्य, उद्देश्य।

5) Accurate — सही, अचूक।

23.5.3 वाक्य-रचना

वाक्य-रचना का अनुवाद में विशेष महत्व है। आप सही शब्द चुन लें, लक्ष्य भाषा की प्रकृति का अनुसरण ठीक ढंग से कर लें, पर यदि वाक्य-रचना सरल नहीं है, तो अनुवाद का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाएगा। आप पढ़ चुके हैं कि 'स्रोत भाषा' की बात 'लक्ष्य भाषा' में ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत करना अनुवाद का लक्ष्य है। अगर अनुवाद की वाक्य-रचना सरल और समझ में न आ सकने वाली होगी, तो 'स्रोत भाषा' की बात 'लक्ष्य भाषा' में स्पष्ट नहीं हो सकती।

वाक्य की जटिलता का सबसे बड़ा कारण 'लंबे वाक्यों का निर्माण' होता है। अतः अनुवाद करते समय छोटे-छोटे और सरल वाक्य बनाने चाहिए। अगर स्रोत भाषा (अंग्रेजी) का वाक्य लंबा है, तो आप उसे विभिन्न इकाइयों में बाँटें। आप ऐसे छोटे-छोटे वाक्य बनाएँ कि 'स्रोत भाषा' में कही गयी बात ज्यों-की-त्यों 'लक्ष्य भाषा' में आ जाए। आइए, एक उदाहरण से इसे समझें :

"The company required large amounts of money to wage wars both in India and on the high seas and to maintain naval forces and armies and forts and trading posts in India."

अनुवाद :

"कंपनी को भारत और बीच समुद्र में युद्ध करने के लिए और अपनी जल और स्थल सेना तथा भारत में अपने किलों तथा व्यापारिक चौकियों की रक्षा करने के लिए, काफी बड़ी रकम की आवश्यकता थी।"

अब इसी अनुवाद को छोटे-छोटे वाक्यों में तोड़कर देखें :

"कंपनी को, भारतीय भूमि पर स्थित अपने किलों और व्यापारिक चौकियों की रक्षा करनी थी। अपनी जल और स्थल सेना का रख-रखाव करना था। भारत के भीतर और बीच समुद्र में अपने हितों की रक्षा के लिए लड़ाइयाँ करनी थीं। इसके लिए उसे एक बड़ी रकम की आवश्यकता थी।"

आप दोनों अनुवादों को पढ़ें। आपको यह महसूस होगा कि छोटे-छोटे वाक्यों के सहारे किया गया अनुवाद सरल, समझ में आने वाला और हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुकूल है। अनुवाद करते समय यदि आप वाक्य बनाने के लिए कुछ शब्द अपनी तरफ से जोड़ते हैं, तो परेशानी की कोई बात नहीं है; बशर्ते कि वह 'स्रोत भाषा' में कही गयी बात के अर्थ को बदल न दे। मसलन, छोटे-छोटे वाक्य बनाने के क्रम में बहुत बार 'इसके', 'अपने', 'उसके', 'उसे', 'इसके लिए' आदि सर्वनाम जोड़ने पड़ सकते हैं। ऐसे प्रयोग अनुवाद के लिए दोष नहीं माने जाते।

आपको एक अभ्यास दिया जा रहा है। आप इसे छोटे-छोटे वाक्यों में तोड़कर अनुवाद करें। अपने अनुवाद को इकाई के अंत में दिए गये नमूने के उत्तरों से मिलाएँ।

अभ्यास– 5

क) Both the objectives — the **monopoly**[1] of trade and control over financial resources — were **rapidly**[2] fulfilled, and **beyond the imagination**[3] of the Directors of the East Indian Company when Bengal and South India rapidly came under the company's political control during the 1750's and 1760's.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ख) The East India company now **acruired direct control**[4] over the **State revenues**[5] of the conquered areas and was in a position to **grab**[6] the **accumulated wealth**[7] of the local rulers, noble, Zamindars.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कठिन शब्दों के अर्थ :

1) Monopoly - एकाधिकार

2) Rapidly - शीघ्रतापूर्वक

3) Beyond the imagination - कल्पना से परे

4) Acquired direct control - सीधा अधिकार प्राप्त हो गया था

5) State revenues - राजस्व

6) Grab - छीनना

7) Accumulated wealth - एकत्र धन

23.5.4 विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अनुवाद

अब तक आपने अनुवाद की आम समस्याओं को हल करने का प्रयास किया। ये अनुवाद के आधारभूत और आवश्यक तत्व हैं। अब आपका परिचय विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे अनुवाद से कराया जाएगा। विभिन्न क्षेत्रों का तात्पर्य विज्ञान, मानविकी, समाज विज्ञान, सरकारी

(अखबार के लिए अनुवाद) का भी हम परिचय प्राप्त करेंगे। अलग-अलग क्षेत्रों में हो रहे अनुवाद का प्रशिक्षण इस इकाई का उद्देश्य नहीं है। पर इसकी चर्चा यहाँ इस कारण से की जा रही है ताकि आप लोग इस प्रकार के अनुवाद की सामान्य दिक्कतों से परिचित हो सकें।

विज्ञान और समाजविज्ञान

इस प्रकार के अनुवादों में 'पारिभाषिक शब्दों' को लेकर समस्या पैदा होती है। पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं, जो सामान्य व्यवहार की भाषा के शब्द न होकर ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों (जैसे, रसायनशास्त्र, भौतिकी, वनस्पतिविज्ञान, समाजशास्त्र आदि) के होते हैं तथा विशिष्ट ज्ञान, विज्ञान या शास्त्र में जिनकी अर्थसीमा निश्चित रहती है। अनुवाद में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते समय एक बात ध्यान रखनी चाहिए, वह यह कि अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रयोग ज्यों-का-त्यों किया जाए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं— ग्राम, मीटर, एम्पियर, वोल्ट, वाट, कैलरी, लिटर, सल्फर, फॉरनाहाइट, विटामिन, ग्लूकोज आदि। हिंदी में भी काफी पारिभाषिक शब्द बन चुके हैं, जैसे भौतिकी, वाष्पीकरण, तापमापी, परावर्तक, अतिचालकता आदि। विज्ञान के विषयों में हिंदी के पारिभाषिक शब्दों को बढ़ावा देना चाहिए, पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्य पारिभाषिक शब्दों को ज्यों-का-त्यों स्वीकार करने में कोई हर्ज नहीं है। विज्ञान संबंधी अनुवाद करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

इसी प्रकार समाजविज्ञान के क्षेत्र में भी पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। विज्ञान की अपेक्षा इसमें हिंदी के पारिभाषिक शब्द अधिक प्रचलित हैं। जैसे— Totalitarian Political system के लिए **सर्वाधिकारवादी राज्य-व्यवस्था।** कुछ अंग्रेजी शब्दों का हिंदीकरण कर लिया जाता है, जैसे **ब्रितानी, आंग्ल, त्रासदी, तकनीक, अकादमी** आदि। इस प्रकार पारिभाषिक शब्दों के मामले में मोटे तौर पर तिहरा रास्ता अपनाया जाना चाहिए -

i) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग

ii) हिंदी में पारिभाषिक शब्दों का निर्माण और उनके प्रचलन को बढ़ावा

iii) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली का हिंदीकरण

विज्ञान और समाजविज्ञान से संबंधित अनुवाद, अनुवाद के आधारभूत नियमों को ध्यान में रखकर किया जा सकता है, बशर्ते कि आपको उस विषय और उससे संबद्ध पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान हो।

साहित्यिक अनुवाद

किसी भाषा के साहित्य का दूसरी भाषा में अनुवाद करना एक कला है। कला इसलिए कि यह अनुवाद अनुवादक से कल्पनाशक्ति और सर्जनात्मक क्षमता की अपेक्षा रखता है। इसमें भावानुवाद पर बल दिया जाता है। अनुवादक मूल लेखक के भावों, विचारों और भाषा को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि मूल रचना का पूरा प्रभाव अनुवाद में बना रहता है और अनुवाद कृत्रिम नहीं लगता। इसके लिए दोनों भाषाओं की अच्छी पकड़ अनुवादक को होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त मूल रचना की प्रकृति और प्रस्तुति की भी अनुवादक को अच्छी जानकारी होनी चाहिए। अनुवाद करते समय अनुवादक मूल साहित्यिक कृति में प्रयुक्त मुहावरों, कहावतों आदि को अपनी भाषा में ढालता है या उसके स्थान पर लक्ष्य भाषा के मुहावरों, कहावतों का इस प्रकार उपयोग करता है कि वह अनूदित भाषा में सटीक बैठ जाएँ। एक उदाहरण आपके सामने रखा जा रहा है -

Once upon a time in the jungles of Himachal there was a notorious dacoit. Once the dacoit went to a distant big village where he was not know and visited the house of a rich trader. The trader was celebrating the marriage of his only son with **all pomp and show.**

अनुवाद :

एक समय की बात है। हिमाचल के जंगलों में एक खूँखार डाकू रहा करता था। एक बार वह डाकू दूर के एक बड़े गाँव में गया। वहाँ वह एक अमीर व्यापारी के घर पहुँचा। वह व्यापारी **खूब धूमधाम** से अपने इकलौते पुत्र की शादी कर रहा था। उसने काफी लोगों को आमंत्रित किया था। जाने-माने **खाना बनाने वालों को बुलाया गया था** और गोशाला के पीछे रसोईघर **बनाया गया था।**

इस अनुवाद को देखने के बाद आप महसूस करेंगे कि 'स्रोत भाषा' (अंग्रेजी) का 'लक्ष्य भाषा' (हिंदी) में भावानुवाद किया गया है। अंग्रेजी का एक मुहावरा है **Pomp and show**; हिंदी में इसके लिए शब्द चुना गया **धूमधाम।**

इसी प्रकार 'Cooks had been engaged' का अनुवाद किया गया 'खाना बनाने वालों को बुलाया गया'। अगर आप 'Engage' का अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़ेंगे तो इसके अनेक अर्थ मिलेंगे, जैसे - प्रतिज्ञा करना, वचन देना, सगाई, रखना, काम में लगाना आदि। इन अर्थों में 'काम में लगाना' का उपयोग किया जा सकता था, जैसे 'जाने-माने खाना बनाने वालों को काम में लगाया गया था' पर यह अनुवाद बहुत अच्छा नहीं बन पड़ा है। अतः इसका भावानुवाद किया गया—"जाने माने खाना बनाने वालों को बुलाया गया था।" वैसे 'खाना बनाने वालों' के स्थान पर 'रसोइयों' शब्द का प्रयोग भी किया जा सकता है। यह अंग्रेजी के 'कुक्स' शब्द के समतुल्य भी है और हिंदी की प्रकृति और प्रस्तुत संदर्भ के अनुरूप भी है।

मूल भाषा या स्रोत भाषा में जो बात लेखक कहना चाहता है अनुवादक लक्ष्य भाषा में भी वही बात कहता है। इसमें वह लक्ष्य भाषा की प्रकृति का ध्यान रखता है। वस्तुतः भावानुवाद साहित्यिक अनुवाद का प्राण है। इसके अभाव में इस प्रकार का अनुवाद निर्जीव हो जाता है।

अभ्यास - 6

There was a foolish man who was once going to his father-in-laws's place. He had learn to say 'Yes' and 'No' and was told that he should not utter any other word.

The mother-in-law on seeing him said, "Are you all right?"
The fool said, 'Yes'.
She then asked, 'Is my daughter well?'
The fool said, 'No'.
'Is she suffering from fever?' The mother-in-law asked.
'Yes 'said the fool.
'Is she not well now?'asked the monther-in-law.
'No' said the fool.
'Is she dead' she asked.
'Yes' said the fool.

The mother-in-law started weeping loudly.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इस प्रकार का अनुवाद करना सबसे सरल होता है। अनुवादक मूल भाषा में कही बात को अपने ढंग से कहने की पूरी छूट इसमें ले सकता है। पर ऐसा नहीं होना चाहिए कि अपने ढंग से कहने के क्रम में कोई दूसरी ही बात कह दी जाए या मूल भाषा में जो कहा जा रहा है, उसका उल्टा कह दिया जाए। जवाहरलाल नेहरू के व्याख्यान का हवाला देते हुए एक कथन के अनुवाद का नमूना आपने पढ़ा है, जिसमें अर्थ का अनर्थ हो गया है। "Referring to Prime Minister Shri Jawaharlal Nehru's statement regarding Kidnapped women, Shri..... said..... का अनुवाद समाचारों में इस प्रकार आया "प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा भगाई गयी औरतों के बारे में दिए गये वक्तव्यों का हवाला देते हुए श्री..... ने कहा.....।' ऐसी गलती क्षम्य नहीं है।

स्वतंत्र अनुवाद का यह मतलब नहीं है कि इसमें अनुवाद मूल से अलग होता है। इसका इतना ही तात्पर्य है कि अनुवादक मूल भाषा में कही गयी बात का शब्दशः अनुसरण न करते हुए, अपने मुहावरों और शब्दों का प्रयोग करता है।

उदाहरण :

General Zia-Ul-Haq has **ruled out** formation of a civilian Government in Pakistan in the near future.

जनरल जिया उल हक ने निकट भविष्य में पाकिस्तान में लोकतांत्रिक सरकार के गठन की संभावना से इंकार किया है।

इस अनुवाद पर गौर करने से पता चलता है कि अनुवादक ने काफी 'स्वतंत्र' रूप में अनुवाद किया है। 'Ruled out' के लिए **इंकार किया** का प्रयोग किया है। Civilian Government के लिए **लोकतांत्रिक सरकार** का प्रयोग हुआ है। अनुवाद करते समय 'संभावना' शब्द अलग से जोड़ा गया है, जिससे अर्थ स्पष्ट हो सके। लीजिए अब आप कोशिश कीजिए।

अभ्यास– 7

India has urged[1] the United States[2] to 'reconsider its decision"[3] and grant Palestine Liberation Organization (PLO)[4] Chief Yasser Arafat a visa to enable him to attend the UN General Assembly Debate[6] on Palestine.

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

कठिन शब्दों के अर्थ :

1) अनुरोध 2) संयुक्त राज्य अमेरिका 3) फिर से विचार करना 4) फिलस्तीन मुक्ति संगठन 5) संयुक्त राष्ट्र की आमसभा 6) बहस

23.6 सारांश

हम यह मानकर चल रहे हैं कि आपने इस इकाई को ध्यान से पढ़ा होगा। अतः आपको अनुवाद के विविध पक्षों की जानकारी हो गयी होगी।

- अब आप इस बात की व्याख्या कर सकते हैं कि अनुवाद एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक भाषा की बात दूसरी भाषा में कही जाती है, लेकिन इसमें केवल भाषा का बदलाव होता है, विचार और भाव ज्यों-के -त्यों रखे जाते हैं।
- अनुवाद करते समय अनुवादक दो प्रक्रियाओं से गुजरता है। ये हैं — अर्थग्रहण और संप्रेषण। 'अर्थग्रहण' में वह स्रोत भाषा में कही गयी बात को समझने की कोशिश करता है। 'अर्थग्रहण' करते समय वह शब्दगत, वाक्यगत और रचनागत विशेषताओं का ध्यान रखता है। आप अब 'अर्थग्रहण' करते समय मुख्य समस्याओं को पहचान सकते हैं और उन्हें व्यवहार में लाते समय ध्यान में रख सकते हैं। 'संप्रेषण' अनुवाद की दूसरी और अंतिम प्रक्रिया है। इसमें भी अनुवादक को लक्ष्य भाषा की शब्दावली और वाक्य रचना का ध्यान रखना पड़ता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप 'संप्रेषण' की समस्याओं से परिचित हो गये हैं। अनुवाद करते समय आप इस जानकारी का उपयोग कर सकते हैं।
- सबसे बड़ी बात यह है कि हमने अनुवाद करने के लिए एक सहारा मात्र आपको दिया है। इसके माध्यम से आप अपनी लगन द्वारा अनुवाद का काम अच्छी तरह निपटा सकते हैं। अनुवाद का सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करने के अलावा आपने अनुवाद 'करना' भी सीखा है, अर्थात् अनुवाद का व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त किया है। अतः आपको इस इकाई के माध्यम से अनुवाद की एक समग्र विधि के साथ ही एक निश्चित दृष्टि भी प्राप्त हो गयी है, जिसके सहारे आप सफल अनुवाद कर सकते हैं।

23.7 उपयोगी पुस्तकें

अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली।

अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं ओम प्रकाश, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली।

हिन्दी में व्यावहारिक अनुवाद, **आलोक कुमार रस्तोगी, जीवन ज्योति प्रकाशन, दिल्ली।**

23.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न– 1

i) एक भाषा में व्यक्त भावों और विचारों को दूसरी भाषा में ज्यों-का-त्यों उपस्थित करना अनुवाद है।

ii) क) (×) ख) (√) ग (×) घ) (√)

iii) अनुवाद

iv) जिस मूल भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्रोत भाषा और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है, उसे लक्ष्य भाषा कहते हैं।

बोध प्रश्न– 2

i) (ख)

ii) अनुवाद कार्य के लिए अनुवादक से यह अपेक्षा होती है कि वह मूल भाषा या स्रोत

बोध प्रश्न– 3

i) एक शब्द के स्थान पर उसी अर्थ का या उससे निकट अर्थ का दूसरा शब्द रखना 'शब्द की समतुल्यता का सिद्धांत' कहलाता है। अनुवाद करते समय अनुवादक स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर लक्ष्य भाषा में उसी अर्थ को बताने वाला दूसरा शब्द रखते हैं।

i) प्रसंग

i) देखें 23.4.1

i) देखें 23.4.3

अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास– 1

क) मुझे उसके आने में संदेह है।

ख) हमें संदेह है कि वह इसे स्वीकार करेगा।

ग) मुझे राम के जाने में संदेह है।

घ) मुझे संदेह है कि तुम यह कार्य कर सकते हो।

ङ) यह पुस्तक अच्छी है, इसमें मुझे संदेह है।

अभ्यास– 2

क) मेरी तीन पुत्रियाँ हैं।

ख) मैंने अपनी कलम खो दी।

ग) मुझे कुछ नहीं मालूम।

घ) मैं बी.ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।

ङ) मेरे सिर में दर्द है।

च) मुझे बुखार है।

छ) मुझे दर्द है।

ज) मेरे गले में दर्द है।

अभ्यास– 3

क) ट्रेन समय **से** आयी।

ख) मैं दिल्ली **में** उससे मिला।

ग) मेरी कलम टेबल **पर** है।

घ) वह शुक्रवार **को** आएगा।

ङ) वह एक साल से एक स्कूल **में** पढ़ा रहा है।

च) वह मंगलवार **से** यहाँ काम कर रहा है।

छ) **मुझे** एक कलम खरीदनी है।

ज) मैंने क्रिकेट खेलने **के लिए** उसे आमंत्रित किया।

अभ्यास– 4

क) डॉक्टर ने संतोषजनक ढंग से रोगी का **इलाज** नहीं किया।

ख) विद्वान ने संतोषजनक ढंग से विषय का **प्रतिपादन** नहीं किया।

ग) बैंक की **सूद-दर** बहुत ज्यादा है।

घ) खेलकूद में उसकी **रुचि** नहीं है।

ङ) आइ.ए.एस. अधिकारी बनना उसका मुख्य **लक्ष्य** है।

च) उसका **निशना** सही नहीं था; अतः वह निशानेबाजी में स्वर्णपदक नहीं प्राप्त कर सका।

अभ्यास– 5

क) व्यापारिक एकाधिकार और वित्तीय साधनों पर अधिकार — दोनों उद्देश्यों की यथाशीघ्र पूर्ति हुयी। यहाँ तक कि 1750-69 के बीच बंगाल और दक्षिण भारत पराजित होकर कंपनी के राजनीतिक अधिकार में आ गये। ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशकों ने इसकी कल्पना तक नहीं की थी।

ख) अब कंपनी को इन अधिकृत क्षेत्रों से राजस्व वसूल करने का सीधा अधिकार प्राप्त हो गया था। वह स्थानीय शासकों, सामंतों, और जमींदारों के पास एकत्रित धन को छीनने-खसोटने में सक्षम हो गयी।

अभ्यास– 6

एक बार एक मूर्ख अपनी ससुराल जा रहा था। उसे सिखाया गया था कि वह सभी प्रश्नों का जवाब "हाँ" और "नहीं" में दे। इसके अलावा वह एक शब्द भी न बोले।

सास ने उसे देखते ही पूछा "तुम ठीक हो?"
मूर्ख ने जवाब दिया, "हाँ।"
उसने फिर पूछा "मेरी पुत्री ठीक है?"
मूर्ख ने जवाब दिया, "नहीं।"
"क्या उसे बुखार है?" सास ने पूछा
"हाँ", मूर्ख ने जवाब दिया।
"क्या अब भी वह ठीक नहीं है?" सास ने पूछा।
"नहीं" मूर्ख ने कहा।
"क्या वह मर गयी।" उसने पूछा।
"हाँ" मूर्ख ने कहा।
इस पर उसकी सास जोर-जोर से रोने लगी।

अभ्यास– 7

भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका से अनुरोध किया है कि वह फिलीस्तीन मुक्ति संगठन के नेता यासर अराफ़ात को वीसा न देने के अपने निर्णय पर फिर से विचार करे और उन्हें वीसा दें; ताकि संयुक्त राष्ट्र की आमसभा में फिलीस्तीन पर होने वाली बहस में वे हिस्सा ले सकें।